

जानमपदार्थि

1722

I

॥ श्रीगुरुदेवो नमः ॥

ॐ २५ चा २४

यजमान

नर्वि

कजी

कजिनी



नो कु

नो कु न किं

पुश ही मे



न किं

दा कि नि

सा कि

नि

क वा



वो कसी



फुवहाय कल्ल



त कुजो



तुफिजो



बुपीजो



कुजों



पाजों



इजों



ख मूजों



कनजों



आजों

यजु



स्वामी



जलधल जों



॥दुर्ग॥



॥दुर्ग॥



पिशाक



मुखाथा



पिशाक



धौ धाकः

हा लु जों !

हा सा जों

यल
जों



पुष्पमाला
हा हा हा

सिंह

सिंहिनी



॥ जले ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ ततो जल बोये विधिः ॥ ॥
घण्टा करणं चतुर्दशीं खुह जले पोद चिकजि
तल्लथका लिङ्गं स्वकलां रुद्रं रक्त पूजा जो
रुद्रं पूजा क्व वृद्धं मता कला लिङ्गं रक्त
ते दये के माल ॥ दुपर मे मे पिंथ वन हन पर्य
त माल को दये के माल ॥ ॥ कापोल भक्षतः ॥

॥ बोये ॥

॥ रुले ॥

का प्रका मुखा जजम का कुं हल का उव व वे ठ
सि धल ॥ ॥ स्वान थते दये कं ॥ आव मन ॥ ३ ॥ प्रा
णायाम वृत्ति शी ॥ चतु संस्कार ॥ अत्रि षे क का
पोल स चेत सिं धल जजम का स्वान अक्षत ह
का प्रका मोत स्वान ॥ धृते तया व कुं हल का न वि
ये न पल पे मं न ॥ अधोर व ज वृत्ति सि मं न धा

॥ वीये ॥

ल ॥ आ माया द को न ॥ धृते ज पल पा व तये
॥ ॥ धृ नं लि आव ण भु क्त या त्रयो द शी कु हु रु
ले द को था ये था ये स वो य ॥ रु ले य ता पा त व व
लि ॥ द्व दु १ २ के उ त व २ ग व ल जा व मे ला उ त व ॥ ॥
ता ये पो ता ये धूं ज जं का द ता ल स ह्ये न्या म
ता कि हि न फं १ पु दि शा ॥ गो ये गो १ ॥ थ ३

॥ॐ॥

ना जजमानं पुष्पभाजनं ॥ अद्य ॥ वा क्य ॥
अमुकगोत्रजजमानस्य कृतनीविवाहो देश
सर्वारिष्टशान्तिका मनं या पुत्रिका च तप्राश
नवल्या त्वनपूजानिमित्त्य ये पुष्पभा
जनं समर्पयामि ॥ श्रीसंवत् ॥ श्या मारुता
॥ ॥ विवाहविद्यु संतर्त सर्वविघ्नविनाश
व

॥वेये॥

कृ
नं ॥ ते नैव पुत्रिकारूपसर्वशान्तिकरं तु
मे ॥ नमस्ते पुत्रि सर्व अपमृत्युविनाश
नं ॥ आयुप्रदं तु कल्याणं मङ्गलं शुद्धि
प्रदा ॥ ददाति पुत्रपौत्रं च सर्वमङ्गलका
रक ॥ परिवारेषु सर्वेषां शान्तिकुर्वन्तु सर्व
दा ॥ सिद्धिरस्तु ॥ आचार्यगोयक मंदलु पुष्प

॥ जले ॥

भाजनं समर्पयामि ॥ इति पुष्प भाजनं
॥ गुरु नमस्कार न्यास जल पात्र अर्घ्य पात्र
पूजा भूत भुक्ति ॥ आत्म पूजा ॥ त्रिदेव श
योगि शक्ति ॥ इन्द्रादि हेतुकादि ॥ वृक्षा रायादि
॥ अचोर वज्रवति शीन ॥ हकार सकार च न
बलि स पूजनम् ॥ धन लि जले पूजाया

॥ वीथे ॥

ये ॥ ॐ अस्मिताङ्ग मैरवाय नमः ॥ ८ ॥ पूजनं
॥ हौं हृदयाय नमः ॥ गंधातोय बलि गृ
ह २ स्वाहा ॥ बलि ॥ ॐ हौं रुद्र मैरवाय नमः
॥ पूजनं शिरो पूरणं बलि गृह २ स्वाहा
तेन बलि ॥ ॐ चण्ड मैरवाय नमः ॥ पूजनं
शिषा शिमतो नयनाय स्वाहा ॥ तेन बलि ॥ ॥

॥ वले ॥

पूजनं ॥ पुनिका संपूर्ण मङ्गलाय पूजयामि
नमः ॥ तेन वलि ॥ पुनिका दशमे गमै संपू
र्ण मङ्गलाय वलिं गृहस्वाहा ॥ वलि ॥ ॐ
हौं क्रोधभैरवाय नमः ॥ पूजनं ॥ ॐ हौं पुत्रि
का जाताय स्वाहा ॥ तेन वलि ॥ ॐ नमः श्री
पुत्रिका मूर्तेभ्यो नमः ॥ जज माननं मृत्युं

॥ वये ॥

नू

जयमूलेन त्रियां जलि ॥ जज मानीनं मृ
त्युं जयशक्ति मूले पूजा ॥ आ मायया त्रियां
जलि ॥ ॥ वलि विये ॥ अजरादि ० जयादि ॥
वाक महा वलि धुनके ॥ धूप दीप ॥ जप
॥ स्तोत्र ॥ श्री संवर्त्ता ॥ विभूक्त महा माया ॥
ब्रह्मायणी ॥ आ मायया ॥ विवाहे विघ्न

॥ जले ॥

संवत्तसर्वविद्याविनासनम् ॥ तेनैव पुत्रि
कारूपं सर्वशान्ति कर्तुमे ॥ नमस्ते पुत्रि
का सर्वे अपमृत्युविनासनम् ॥ ओयुप्र
दत्तुकल्याणं मङ्गलं च प्रियप्रदा ॥ ददाति सु
त्रपौत्राच सर्वमङ्गलकारक ॥ परित्वा
पु सर्वेषां शान्तिं कर्तुं सर्वदा ॥ यथावा

॥ वीये ॥

न ॥ गोयेष्टये ॥ तपे शां जले नो वायवे ॥
जले लोक पुत्रि का द्यूत प्रासनया चैके
॥ पाले लाल पते सद्युत तया कृष्ण पति कंक्ष
ये ॥ स्वस्ति वा क्य ॥ स्वस्ति कुश्या स दा वि
द्यि स्वस्ति मार्तण्ड मेव च ॥ योगिनी स्वस्ति
सर्वा च स्वस्ति पीठ स्वक्षत्रका ॥ पूर्वे दक्षि

॥ ज्ञे ॥

रापश्चात्तरत्तराद्धाधचस्तथा ॥ स्वस्तिषट्पुहा
गमद्वतुगुप्रप्रकरदेवता ॥ नैरवानि
रवीसङ्गस्वस्तिस्वःस्वःस्वचक्रगया ॥ ॥
स्वमंत्राश्च स्वमुद्राश्च स्वायुधापरिवार
काः ॥ ग्रहनक्षत्रराशिस्था स्वस्ति सर्वस्व
सस्तथा ॥ स्वस्तिवीराप्रमेलाश्च योगिग्ये

॥ बोधे ॥

गरा नायका ॥ स्वस्तिदेव्याधिदेवेद्रि मं
त्रराजो न्ति रत्तरं ॥ हवे परालितृ प्राश्च स्व
स्ति कुलाग्रे देवताः ॥ स्वस्ति राजो प्रजानां च
यजमाना स्वस्ति सर्वदा ॥ अत्र गंधादि ॥
जुलिनोसिचके ॥ संकल्ये मुनाक्कलंघ
समयता तयाक्कवाचकलद्वये ॥ ॥

॥ जूले ॥

वलि स सम य द्वाये ॥ त प र ण ॥ द क्षि ण दं ४ ॥

वलि विसर्जन याये ॥ वलि जु को मु ना व षु

सी स वा च क ल द्वाये ॥ ग रा जु क र ना य स

द्वाये ॥ स्वा द्वाये ॥ ॥ जू लि जु को वो या

व्र त ये ॥ शं ति कु ह च तु र्द क्षि या दि न स ॥ जू लि

धा ये पु त्रि का स पू जा ह पा या ये ठ थे या ये

॥ वो ये ॥

॥ पाल पो ह ल स फ ल त या व पु त्रि का य ता

फ ल प्रा स न या च के ह पा चू त प्रा श न या ये

ठ थे या ये ॥ क लं क द्वाये ॥ ठ थे ॥ इ ति च तु

र्द क्षी वि धिः ॥ ॥ शं ति कु ह पू र्णि मा या दि न

स पू जा स म सं ठ थे ह पा या ये ॥ सि मी या

ह ल स तु लु ता ला त या व पु त्रि का य ता द

॥ जुले ॥

को ए न द्याया व प्राशन याचके ॥ उथे ॥
कलंक द्येये ॥ उथे ॥ स ह्यय द्येये ॥ त प ह
र्ण ॥ दक्षिण ॥ ए का ने के ति ॥ पुत्रि का स्व
स्थान या ना व ता र्थे ॥ संति कु ह प्रति प ह
दा या दि न स सु था स शो क दा न दा ॥ दो ये
रु नि द्येये ॥ पर से ष सा या त सोः

त का व रा वि क भा ग जु ल श क ले षु
सि स चो य क ल द्येये वि या व द्येये
॥ हं सं हं व्या स हं वि स्थे द्येये ॥ शो वा
ये ॥ ज ज मा न या स म स न अ मि षु म
मिं को थ पु त्रि का स वा ङ्ग मा ल पा व
स म स न शाने जु ई मा ल पे ॥ ॥ श्री इ

॥५॥

ए देवताया के मता पूजा याये माल
हिथं ॥ घराठा करण वतु देशी कुहूर
या पोत विये माल ॥ ॥ इति इ पादे
या रुले चा पूजा याये या विधि पद्धति
॥ ॥ उ पाद्या या विवाह धुन उगलि
विवाह वर्ष सः श्रावण शुक्ल त्रयो दशि

॥ बोये ॥

कुहु निस्ये रुले चा बोये विवाह म
या स्ये रुले चा बोये म दु ॥ शुभम् ॥
भूयात्सदा सर्वदा कल्याणम् ॥ ॥ ॥

यही संवत् २००२ साल भाद्र १४ गते
रोज पु मा श्री कृष्ण हरि ए जो पाद्या को पुज
कः कल्लेलेलो भगर्नु हूँ देन पाप लागदछ





॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्री गणेशाय नमः

ASHA ARCHIVES

श्री गणेशाय नमः	
1722	I

ASHA ARCHIVES















श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीमद्भगवद्गीता ॥ १ ॥
 अर्जुनस्य भ्रातॄणां कौरवस्य च ॥
 द्रुपदो वीष्णुर्मातुल्योऽथ कृष्णः ॥
 भीमार्जुनसमो युधामन्युः ॥
 द्रुपदो वीष्णुर्मातुल्योऽथ कृष्णः ॥
 भीमार्जुनसमो युधामन्युः ॥
 द्रुपदो वीष्णुर्मातुल्योऽथ कृष्णः ॥
 भीमार्जुनसमो युधामन्युः ॥
 द्रुपदो वीष्णुर्मातुल्योऽथ कृष्णः ॥
 भीमार्जुनसमो युधामन्युः ॥

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 कृष्णार्पणं कृतम् ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

1722 I

1722 I

1722 I